INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 3 | APRIL – 2025

रीवा जिला के विद्यार्थियों में खेल के प्रति जागरुकता लानेवाले कारकों का अध्ययन

सलिल कुमार गौतम
शोधार्थी शारीरिक शिक्षा
लाइफ लाँग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. मधुलिका श्रीवास्तव
प्राध्यापक समाजशास्त्र
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

विद्यार्थियों में खेलों के प्रति स्वाभाविक रुचि तो है, परंतु जागरूकता का स्तर संसाधनों, मार्गदर्शन और सामाजिक सहयोग की कमी के कारण सीमित है। रीवा जिले के विद्यालयों में खेल सुविधाओं की उपलब्धता सीमित है तथा प्रशिक्षित खेल शिक्षकों की भारी कमी है। इसके साथ ही, विद्यालयों में खेलों को पढ़ाई के समान महत्व नहीं दिया जाता, जो विद्यार्थियों के खेलों से जुड़ाव को प्रभावित करता है। पारिवारिक सहयोग एक प्रमुख भूमिका निभाता है, और अधिकांश विद्यार्थियों को घर से कुछ हद तक प्रोत्साहन प्राप्त होता है, लेकिन जब बात खेल को कैरियर बनाने की आती है, तो अभिभावकों में संकोच और असमंजस की स्थिति देखी गई। इसके अतिरिक्त, सरकारी योजनाओं एवं कार्यक्रमों जैसे "खेलो इंडिया" या "फिट इंडिया" की जानकारी छात्रों तक बहुत कम मात्रा में पहुँच रही है, जिससे वे उपलब्ध अवसरों से वंचित रह जाते हैं। यह अत्यंत आवश्यक है कि शिक्षा व्यवस्था, परिवार और सरकार तीनों मिलकर ऐसा वातावरण बनाएं, जिसमें विद्यार्थियों को खेलों के प्रति प्रेरित किया जा सके और वे शारीरिक व मानसिक दोनों दृष्टियों से सशक्त बन सकें।

मुख्य शब्द – विद्यार्थी, रीवा जिला, शारीरिक शिक्षा, विद्यालयीन खेल एवं शिक्षा।

प्रस्तावना –

मानव सभ्यता के प्रारंभिक काल से ही खेलों को मनोरंजन, शारीरिक व्यायाम और सामाजिक सहभागिता का माध्यम माना गया है। प्राचीन काल में भारत में 'मल्लयुद्ध', 'धनुर्विद्या', 'गति–क्रीड़ाएं' (जैसे दौड़, कूद) अत्यंत लोकप्रिय थीं। महाभारत और रामायण काल में भी खेलों का उल्लेख मिलता है। समय के साथ खेल केवल मनोरंजन तक सीमित न रहकर व्यक्तित्व निर्माण, मानसिक विकास और राष्ट्रीय गौरव से जुड़ गए हैं। आज के वैश्विक परिदृश्य में खेल एक ऐसा क्षेत्र बन चुका है जहाँ न केवल नाम और सम्मान मिलता है बल्कि कैरियर की संभावनाएँ भी हैं। खेलों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि को मजबूती दी है। ऐसे में विद्यार्थियों में खेलों के प्रति जागरूकता अत्यंत आवश्यक है, ताकि वे शैक्षणिक और शारीरिक दोनों ही रूपों में सशक्त बन सकें।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में खेलों को परंपरागत रूप से एक गौण विषय के रूप में देखा जाता रहा है। कई विद्यालयों में आज भी खेलों को पढ़ाई के बाद का कार्य समझा जाता है। हालांकि, नई शिक्षा नीति 2020 में खेलों को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा माना गया है। नीति कहती है कि 'शिक्षा केवल अकादमिक उपलब्धि नहीं, बल्कि समग्र विकास का नाम है।' लेकिन जमीनी हकीकत अलग है। स्कूलों में खेल के प्रशिक्षकों की कमी, खेल मैदानों का अभाव और संसाधनों की अनुपलब्धता, विद्यार्थियों के खेलों में रुचि के बावजूद बाधा बन जाती है। कई बार माता–पिता भी पढ़ाई के दबाव के कारण बच्चों को खेलों से दूर रहने की सलाह देते हैं।

रीवा जिला मध्यप्रदेश का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध क्षेत्र है। यह विंध्य क्षेत्र में स्थित है और यहाँ की पहचान 'सफेद बाघों की भूमि' तथा शैक्षणिक केंद्र के रूप में भी है। यहाँ सरकारी और निजी दोनों प्रकार के शैक्षणिक संस्थान हैं, जिनमें हजारों विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। रीवा में खेलों की संभावना बहुत अधिक है। जिले के युवाओं में उत्साह है, परंतु संसाधनों की कमी, मार्गदर्शन का अभाव और खेलों के प्रति समुचित नीति न होने के कारण यह प्रतिभा अक्सर दम तोड़ देती है।

एक विद्यार्थी के लिए खेल केवल शरीर को स्वस्थ रखने का माध्यम नहीं, बल्कि मानसिक एकाग्रता, आत्म–नियंत्रण, टीमवर्क और नेतृत्व क्षमता का विकास भी करता है। जो विद्यार्थी नियमित रूप से खेल गतिविधियों में भाग लेते हैं, वे पढ़ाई में भी अधिक अनुशासित और ऊर्जा से भरपूर पाए जाते हैं। खेलों के जरिए विद्यार्थियों को हार–जीत का महत्व समझ में आता है, जिससे उनमें जीवन के संघर्षों को झेलने की क्षमता विकसित होती है। परंतु यह जागरूकता तभी संभव है जब खेलों के महत्व को सामाजिक और शैक्षणिक स्तर पर बराबर मान्यता दी जाए।

आज का युग डिजिटल और तकनीकी विकास का है, जहाँ बच्चे अधिकतर समय मोबाइल, वीडियो गेम्स या सोशल मीडिया पर बिताते हैं। यह एक चिंताजनक स्थिति है क्योंकि इससे उनकी शारीरिक सक्रियता में भारी गिरावट आई है। इस स्थिति को बदलने के लिए विद्यार्थियों में खेलों के प्रति जागरूकता लाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। इसके लिए सबसे पहले अभिभावकों को यह समझना होगा कि खेल केवल समय की बर्बादी नहीं, बल्कि एक सकारात्मक निवेश है। साथ ही, शिक्षण संस्थानों को भी खेलों के प्रति गंभीरता दिखाते हुए उचित सुविधा, समय और प्रशिक्षण प्रदान करना होगा।

भारत सरकार और मध्यप्रदेश सरकार द्वारा खेलों के प्रोत्साहन के लिए अनेक योजनाएँ चलाई जा रही हैं – जैसे 'खेलो इंडिया', 'फिट इंडिया मूवमेंट', और राज्य स्तरीय छात्रवृत्तियाँ। परंतु इन योजनाओं की जानकारी जमीनी स्तर तक छात्रों तक पहुँच नहीं पाती, या फिर इसके क्रियान्वयन में अनेक बाधाएँ हैं। यदि इन योजनाओं को प्रभावशाली तरीके से लागू किया जाए और खेलों को शिक्षा के केंद्र में रखा जाए, तो न केवल खेलों में जागरूकता बढ़ेगी बल्कि भारत को नए खिलाड़ी भी मिलेंगे।

विश्लेषण –

शारीरिक गतिविधि सिर्फ सामाजिक और व्यक्तिगत गुणों को विकसित करने का माध्यम नहीं है, बल्कि राष्ट्र निर्माण का एक साधन भी है। खेल देशों को एकजुट करते हैं और सद्भाव को बढ़ावा देकर अंतर्राष्ट्रीय शांति का समर्थन करते हैं। यह व्यक्तियों के बीच सहयोग की भावना विकसित करता है और सार्वभौमिक भाईचारे की भावना भी पैदा करता है। खेल आयोजन दुनिया भर में शांति और एकता का संदेश फैलाने का एक माध्यम हैं। कुल मिलाकर, यह व्यक्तियों को समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के वांछनीय तरीके सीखने में मदद करता है। वर्तमान समय में जब दुनिया आम चुनौतियों का सामना कर रही है, इसलिए रचनात्मक सोच की शक्ति हमारी मानव जाति को सशक्त बनाने के लिए एक बहुत ही आवश्यक उपकरण है।

स्कूली शिक्षा एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक जैसे क्षेत्र शामिल हैं। अकेले शिक्षा हमारे छात्रों को इन सभी को अच्छी तरह से विकसित करने में मदद नहीं कर सकती। यह एक स्वस्थ बदलाव है कि अधिकांश हितधारकों ने छात्रों के समग्र विकास के लिए शारीरिक शिक्षा के महत्व को पहले ही समझ लिया है। हालाँकि, हमें अभी भी अपने बच्चों को उनकी औपचारिक शिक्षा के प्रारंभिक चरणों से ही इन आदतों को विकसित करने के लिए और अधिक प्रेरित करने की आवश्यकता है। एक खुशहाल और स्वस्थ जीवन जीने के लिए, शैक्षणिक विकास को शारीरिक गतिविधियों द्वारा पूरक होना चाहिए। इसके अलावा, जंक फूड का सेवन कम करना और ध्यानपूर्ण गतिविधियों (जैसे ध्यान और योग, आदि) में शामिल होना भी

उतना ही आवश्यक है। हमारा देश दुनिया की सबसे युवा आबादी में से एक है, और हमारी युवा पीढ़ी को सही मायने में हमारी सबसे बड़ी संपत्ति माना जाता है!

अध्ययन क्षेत्र में विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के मार्गदर्शन में संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों में खेल के प्रति जागरुकता लाने वाले प्रमुख कारकों का आकलन करने हेतु मौलिक स्तर पर साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम सर्वेक्षण का कार्य कर आंकड़ों को प्राथमिक स्तर पर संकलित किया गया है, इस तरह प्राथमिक स्तर पर चयनित किये गये संमकों को सरल बनाने हेतु वर्गीकृत करते हुए सारणी क्रमांक 1 में प्रस्तुत कर विश्लेषणात्मक व्याख्या की गयी है –

सारणी क्रमांक 1
विद्यार्थियों में खेल के प्रति जागरुकता लाने वाले कारकों का विवरण

क्रमांक	विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	माता–पिता	71	23.67
2.	परिवार के सदस्य	47	15.67
3.	मित्र	46	15.33
4.	विज्ञापन	66	22.00
5.	खेल प्रशिक्षक	28	9.33
6.	समाज	33	11.00
7.	अन्य	9	3.00
	कुल योग	300	100.00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उक्त सारणी के संमकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि, चयनित कुल 300 खिलाड़ी उत्तरदाताओं में से 71 विद्यार्थियों ने बतलाया कि खेल के प्रति जागरुकता माता–पिता लायें, जिनके प्रतिशत 23.67 हैं। इसी प्रकार क्रमशः 47 विद्यार्थियों ने परिवार के सदस्य, 46 विद्यार्थियों ने मित्र, 66 विद्यार्थियों ने विज्ञापन, 28 विद्यार्थियों ने खेल प्रशिक्षक, 33 विद्यार्थियों ने समाज और 9 विद्यार्थियों ने समाज के अन्य व्यक्तियों को खेल के प्रति जागरूकता लाने को बतलाया है, जिनके प्रतिशत क्रमशः 15.67, 15.33, 22.00, 9.33, 11.00 एवं 3.00 है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सर्वेक्षित विद्यालयों में से चयनित किये गये सबसे अधिक 71 विद्यार्थियों ने बतलाया कि खेल के प्रति जागरूकता लाने वाले कारकों में माता–पिता हैं।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि खेलों का विद्यार्थी जीवन में महत्त्व जितना बढ़ा है, उतना ही उन्हें अनदेखा भी किया गया है। आज आवश्यकता है एक संतुलित सोच की–जहाँ खेलों को भी शिक्षा के समान ही महत्व मिले। यदि विद्यालय, अभिभावक, समाज और शासन सभी मिलकर विद्यार्थियों में खेलों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएँ, तो आने वाले समय में रीवा जिला न केवल शिक्षा में, बल्कि खेलों में भी राज्य और राष्ट्र स्तर पर अपनी पहचान बना सकता है।

संदर्भ –

1. सिंह, आर. (2018) – "भारत में खेलों का महत्व और युवाओं में खेल की जागरूकता".'शारीरिक शिक्षा और खेल पत्रिका', 12(2), 45–50.
2. कुमार, एस. (2019) – "शालेय खेलों में विद्यार्थियों का भागीदारी स्तर : एक विश्लेषण" 'शिक्षा और खेल में सहयोग', 7(1), 99–105.
3. शर्मा, प. (2020) – खेलों के प्रति जागरूकता : रीवा जिले के विद्यार्थियों का अध्ययन, 'भारतीय खेल विज्ञान जर्नल', 8(4), 112–118.
4. भारत सरकार (2020) – फिट इंडिया मूवमेंट और उसके प्रभाव. नई दिल्ली, युवा मामलों और खेल मंत्रालय।

5. पटनायक, बी. (2017) – खेलों के प्रति छात्र–छात्राओं की मानसिकता में परिवर्तन, 'शारीरिक शिक्षा, एक नई दृष्टि', 5(3), 200–205.
6. रॉय, ए. (2019) – विद्यार्थियों में खेल के प्रति जागरूकता और करियर के अवसर, 'शारीरिक शिक्षा और खेल प्रशिक्षण', 6(2), 78–84.
7. गुप्ता, वी. (2018) – खेलो इंडिया, युवा छात्रों के लिए एक सुनहरा अवसर. 'राष्ट्रीय खेल नीति पत्रिका', 11(5), 34–40.